ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

भारतीय कला के उद्भव एवं विकास का इतिहास

B.A. 2nd Year

Paper –III, Indian Art, Architecture and Archaeology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

भारतीय कला के उद्भव एवं विकास का इतिहास

भारतीय कला का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना की मानव सभ्यता का। मानव ने जब से सभ्यता की दहलीज पर पांव रखा तभी से उसने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कला को एक माध्यम के रूप में चुना। इसका प्रमाण हमें मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित भीमबैठका की गुफाओं, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले की अनेकों शैलचित्रों तथा बिहार के कैमूर में स्थित अनेकों शैलचित्रों से प्राप्त होता है। इन गुफाओं में मानव द्वारा निर्मित चित्र तथा औजार पाए गए हैं, जो उनके आश्रय स्थल तथा कला में रुचि के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

प्रागैतिहासिक कालीन मानव के द्वारा प्रागैतिहासिक काल के प्रारंभ से ही कला के विभिन्न प्रमाण हमें देखने को मिलते हैं। कला के रूप में महाराष्ट्र के पटने नामक पुरास्थल से शुतुरमुर्ग के अंडे पर आड़ी-तिरछी रेखाओं के रूप में कला के प्रमाण मिलते हैं, जो कि उच्च पुरापाषाण काल से संबंधित हैं। तत्पश्चात मध्य पाषाण काल, नवपाषाण काल में भी हम कला के प्रमाण भारतीय परिपेक्ष में देखते हैं।

हड़प्पा संस्कृति में अत्यंत परिपक्व कला का दर्शन हमें होता है। हड़प्पा संस्कृति के पुरास्थलों के उत्खनन से सुव्यवस्थित नगर योजना के अंतर्गत दुर्ग निर्माण, रक्षा प्राचीर, पक्की हुई ईटो से निर्मित आवासीय

भवन, सार्वजनिक भवन इत्यादि के प्रमाण प्राप्त होते हैं जो इस संस्कृति के विकसित वास्तु कला की ओर संकेत करते हैं। इसके अतिरिक्त इस सभ्यता का कलात्मक अनुपम नमूना बहुसंख्यक मोहरों और उन पर बनी हुई सजीव आकृतियों, पत्थर एवं कांसे की मूर्तियों, सुंदर आभूषणों, चांदी एवं कांच से निर्मित कामदार बर्तनों तथा चित्रकारी युक्त मिट्टी के बर्तनों में भी देखा जा सकता है। यह विश्व की प्राचीन कलाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

सिंधु सभ्यता के पतन के काल से लेकर मौर्य वंश की स्थापना के पूर्व के इस मध्यवर्ती काल में कला के विषय में हमें बहुत कम साक्ष्य प्राप्त होते हैं। इस काल में भारतीय कला का इतिहास एवं उसकी परंपरा में निरंतरता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। वैदिक साहित्य के साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि शिल्प एवं कला के नमूने लकड़ी आदि पर संभवतः बनाए जाते थे। वैदिक साहित्य में विश्वकर्मा को ब्रह्मा की संतान मानते हुए उन्हें समस्त कलाओं का जनक बताया गया है। वेद में स्थापत्य, मूर्ति एवं चित्रकला के अनेक प्रसंग मिलते हैं। रामायण एवं महाभारत में भी स्थापत्य एवं मूर्तिकला से जुड़े अनेक प्रसंग आए हैं।

भारतीय कला के उद्भव एवं विकास का इतिहास

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में दो महान पुरुष महात्मा बुद्ध, महावीर जैन का आविर्भाव हुआ। उन्होंने बौद्ध तथा जैन धर्म का सूत्रपात किया। उनके विचारों से तत्कालीन भारत की धार्मिक मान्यताओं एवं जीवन मूल्यों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। साथ ही साथ है कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में भी नवीन रचनाओं एवं अवधारणाओं का समावेश इस काल में होता है। बौद्ध ग्रंथों एवं पाणिनि के अष्टाध्यायी से ज्ञात होता है कि इस कालखंड में कला तथा स्थापत्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई थी। पाणिनीय अष्टाध्याई से ज्ञात होता है कि इस काल में कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में नगर नियोजन की राजसभा, भंडारागार, कोषागार आदि के निर्माण की विधि का समुचित ज्ञान हो चुका था। बौद्ध ग्रंथों से ज्ञात होता है कि महागोविंद नामक प्रसिद्ध वास्तुकार अनेक नगरों का निर्माता था। महा उम्मान जातक से एक विशाल राजप्रासाद के बारे में सूचना प्राप्त होती है जो चारों ओर से प्राकार एवं परिखा से घिरा था। इसमें विविध प्रकार की चित्रकारी की गई थी। इस युग का एक प्रमुख स्मारक राजगृह का विशाल प्रस्तर प्राचीर है, जिसे इतिहासकारों ने 'साईक्लोपियन वाल' की संज्ञा दी है।

प्राक् मौर्य युगीन कला का एक अन्य उत्कृष्ट उदाहरण पिपरहवा स्तूप है। यह स्तूप ईटों द्वारा निर्मित था। यहां से प्राप्त अस्थि कलश पर एक लेख उत्कीर्ण है जिसे प्राक् मौर्य युगीन माना जाता है। बिहार के चंपारण जिले में स्थित लौरिया नंदनगढ़ का शवाधान भी प्राक् मौर्य युगीन माना जाता है। यहां के उत्खनन से प्राप्त स्वर्ण पत्र पर अंकित नग्न नारी मूर्ति की पहचान वैदिक मातृदेवी से की गई है। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों से प्राप्त आहत मुद्राओं पर विविध प्रकार के चिन्ह इस युग के उत्कृष्ट कला की ओर संकेत करते हैं।

मौर्य काल में कला के क्षेत्र में काफी विकास हुआ। मौर्य शासकों द्वारा स्थापित राजनीतिक एकता, शांति एवं सुरक्षा तथा आर्थिक समृद्धि के फलस्वरुप कला के विकास के लिए एक उपयुक्त वातावरण तैयार हुआ। मौर्य कला को दो भागों में बांटा गया है: **राजकीय कला** तथा **लोक कला** । राजकीय कला के अंतर्गत चंद्रगुप्त मौर्य के विशाल राजप्रासाद, अशोक के स्तंभ, गुहा विहार, स्तूप का उल्लेख किया जा सकता है। लोक कला के अंतर्गत विभिन्न मूर्तियों को रखा गया है।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात हमें शुंग काल में कला के अनेकों उदाहरण स्तूप के रूप में देखने को मिलते हैं। इस काल में कला के

उदाहरण के रूप में हमें सांची और भरहुत स्तूप के विकसित स्वरूप और परिवर्धित स्वरूप हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। तत्पश्चात कुषाण काल में भारतीय कला के स्वरूप में और निखार आता है। इस काल में कला की दो शैलियां **गांधार कला** और **मथुरा कला** विकसित होती है। इन शहरों में निर्मित मूर्तियों का विकासक्रम कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जहां गांधार कला के अंतर्गत बुद्ध तथा बोधिसत्व की बहुसंख्यक मूर्तियों का निर्माण होता है। और उन पर यूनानी प्रभाव देखा जा सकता है। वहीं मथुरा कला शैली में बुद्ध की मूर्तियों के साथ-साथ हिंदू एवं जैन धर्म से संबंधित मूर्तियों का निर्माण होता है। साथ ही इन मूर्तियों पर भारतीयता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है।

मौर्योत्तर काल में दक्कन क्षेत्र में भी कला का विकास देखने को मिलता है। सातवाहन काल के अंतर्गत अमरावती, नागार्जुनकोण्डा के स्तूप एवम् चैत्य कला के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्त काल के आविर्भाव के कारण कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रमाण प्राप्त होता है। गुप्त काल में स्थापत्य कला के अनेकों उदाहरण राजप्रासाद, स्तूप, मंदिर, स्तंभ, चित्रकला

इत्यादि के अतिरिक्त मूर्तिकला, जिनमें हिंदू, बौद्ध, जैन तीनों धर्मों से संबंधित अनेकों मूर्तियों का निर्माण होने लगता है।

गुप्त काल के बाद भी कला का विकास का क्रम अनवरत जारी रहता है। और गुप्त काल से 12वीं शताब्दी तक का काल मंदिर वास्तु की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। इस काल में तीनों शैलियों नागर शैली, बेसर शैली एवं दविण शैली का प्रादुर्भाव होता है।

इस प्रकार पाषाण काल से लेकर 12वीं सदी ईस्वी तक विभिन्न युगों की कला पर दृष्टि डालने से भारतीय कला के क्रमिक उद्भव एवं विकास की गाथा स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख उपस्थित होती है। भारतीय कला नित नए प्रतिमानों के साथ आज भी अनवरत जारी है।